मार्क्सवाद

(1) राज्य नहीं "वर्ग"

(2) भौतिक परिस्थितियों को समझे
अर्थात आर्थिक परिस्थितियों को।

⇓

पूँजीवाद

⇒ दुनियाँ में व्यवस्था लाने हेतु पूँजीवाद का विनाश करना होगा।

(3) ये अं. राजनीति को समग्रता में समझना चाहते हैं, टुकड़ों में नहीं। (सभी पक्षों को इकट्ठे को नहीं)

मार्क्सवादी सिद्धान्त की मूल मान्यताएँ –

अं. राजनीति के मार्क्सवादी सिद्धान्त में भौतिक एवं आर्थिक परिस्थितियों को प्राथमिक महत्व प्रदान किया गया। आर्थिक परिस्थिति को पूँजीवादी व्यवस्था के रूप में जाना जाता है और मार्क्सवादी विचारधारा में पूँजीवादी व्यवस्था साम्राज्यवाद एवं शोषण का पर्याय है। लेनिन के शब्दों में साम्राज्यवाद, पूँजीवाद की उच्चतम अवस्था है। लेनिन ने साम्राज्यवाद को एकाधिकारवादी पूँजीवाद की संज्ञा दी। पूँजीवादी व्यवस्था का विकास एवं उसका विध्वंस करना मार्क्सवादियों सिद्धान्तकारों का मूल उद्देश्य है।

∴ अं. राजनीति के मा. सिद्धान्त में यथार्थवादी एवं उदारवादी मान्यताओं का स्पष्ट खण्डन देखा जा सकता है। यथार्थवादी मान्यता में राज्यकेन्द्रित विश्लेषण पाया जाता है जबकि उदारवादी मान्यता में सहयोग, समन्वय और मुक्त व्यापार पर बल दिया गया।

Scanned with CamScanner

मार्क्स के अनुसार पूँजीवाद का विनाश अवश्यंभावी है, परन्तु समकालीन मार्क्सी विचारकों में पूँजीवाद के विनाश के तरीकों को लेकर मतान्तर पाया जाता है।

अं. राजनीति के मार्क्सवादी सिद्धान्त में वर्ग को मूल इकाई माना जाता है और इसके अनुसार सम्पूर्ण विश्व दो वर्गों में विभाजित है। लेनिन और अन्य मार्क्सवादियों ने वर्ग एवं राज्य को पारस्पर अन्तरसम्बन्धित कर दिया। लेनिन के अनुसार तीसरी दुनियाँ के देश सर्वहारा देश हैं। पर आश्रितता सिद्धान्तकारों ने भी विश्व को दो श्रेणी के राज्यों में विभाजित किया - एक पूँजीवादी विकसित द्वारा - अल्पविकसित राज्य।

मार्क्सवादी विश्लेषण में अं. राजनीति को समग्रता से देखा गया, इसमें वैधानिक राजनीतिक, नैतिक तत्वों के विश्लेषण के बजाय आर्थिक पहलू पर बल प्रदान किया गया। मार्क्सवादियों के अनुसार यथार्थवादी और उदारवादी सिद्धान्तकार अं. राजनीति का वास्तविक दिखावा करते हैं क्योंकि वे यथास्थितिवाद का समर्थन करते हैं। मार्क्सवाद में क्रान्ति पर बल दिया गया एवं प्रत्येक परिवर्तन को प्रगतिशील माना गया।

Scanned with CamScanner

मार्क्स लेनिन	पराश्रितता सिद्धान्त	वालरस्टीन	नवमार्क्सवाद	रॉबर्टकॉक्स
पूंजीवाद का विश्लेषण वर्गों के सन्दर्भ में	पूंजीवाद राज्य के सन्दर्भ में कोर+परिधि	कोर + परिधि + अर्द्धपरिधि	(बिलवॉरेन) ⇓ मार्क्स की पुनः व्याख्या आधुनिक परिप्रेक्ष्य में, लेनिन के विपरीत (जस्टिन रोजनबर्ग) 1- यथार्थवाद की समग्र आलोचना इसे अधिवास्तवादी बताया।	वैचारिक विश्लेषण ⇓ (पूंजीवाद) ग्राम्शीवाद

② पराश्रितता का मूल कारण पूंजीवाद है।
पूंजीवादी आर्थिक प्रणाली लाभ के आधार पर ही चलती है।

③ सम्प्रभुता - राज्य की सम्प्रभुता के आधार पर पूंजीवाद को कायम रखने का प्रयास किया जाता है।

अं० राजनीति का मार्क्सवादी विश्लेषण द्वितीय विश्व युद्ध के बाद लैटिन अमेरिकी विचारकों ने पराश्रितता सिद्धान्त के द्वारा किया। पराश्रितता सिद्धान्त का आधार लेनिन के विचारों को ही माना जाता है। लेनिन ने विश्व को दो श्रेणी के राज्यो मे विभाजित किया था - Ⓐ पूंजीवादी विकसित राज्य

Ⓑ औपनिवेशिक उपनिवेशवादी राज्य

पराश्रितता सिद्धान्तवादियों ने इसे केन्द्र एवं परिधि के माध्यम से मिलाया। किया। पराश्रितता सिद्धान्त वादों की मूल मान्यताएँ निम्न है -

Ⓐ विकासशील देशों के औपनिवेशित होने का कारण केन्द्र द्वारा शोषण है अतः विकासशील राज्य औपनिवेशित अवस्था हेतु स्वयं उत्तरदायी नहीं है।

(B) पराश्रितता सिद्धान्त के अनुसार शोषणकारी और अल्पविकास में अन्तर होता है। तीसरी दुनिया के देश अल्प विकास के शिकार हैं।

पराश्रितता सिद्धान्तों की प्रेरणा द्वारा विकासशील देशों ने 1974 में नव-अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था की माँग उठाई क्योंकि विकासशील देशों को प्रतीत होने लगा कि वर्तमान व्यवस्था शोषणकारी है, इस मार्ग द्वारा विकासशील देश विकसित नहीं हो सकते हैं।

(C) विकासशील देशों के अल्पविकसित होने का मूल कारण विनिमय के साधन हैं क्योंकि विकासशील कच्चे मालों का निर्यात करते हैं जबकि विकसित देश विनिर्मित वस्तुओं का निर्यात करते हैं।

(D) पराश्रितता सिद्धान्तकारों ने वर्गीय विश्लेषण के बजाए अन्तर्राष्ट्रीय विश्लेषण को केन्द्र बनाया और अतिरिक्त मूल्य के बजाए, इन्होंने विनिमय की असमानता पर बल प्रदान किया

(E) पराश्रितता सिद्धान्तकार पूँजीवादी व्यवस्था के विनाश के समर्थक हैं ∴ ये उदारवादी और मार्क्सवादी दोनों से असहमत हैं।

Scanned with CamScanner

व्यवहारिक उदा० और परनिर्भरता सिद्धान्त -

(क) द० पूर्वी एशियाई देशों के तीव्र आर्थिक विकास के परिणामस्वरूप ~~..~~ परनिर्भरता सिद्धान्त पर अंगुली उठने लगी क्योंकि ये विकासशील देश ~~.....~~ विश्व अर्थव्यवस्था के साथ एकीकृत होकर आर्थिक विकास की ओर अग्रसर हुए, जिससे यह सिद्ध है कि अल्प विकसित भी विकसित देशों की श्रेणी मे पहुँच सकते हैं।

व्यवस्था सिद्धान्त -

(1) व्यवस्था सिद्धान्तकारों ने सं. व्यवस्था को विश्व अर्थव्यवस्था की संज्ञा दी, यथा। वालर्स्टीन ने व्यवस्था के आधार पर मार्क्सवादी विश्लेषण प्रस्तुत किया और उन्होंने इस अर्थव्यवस्था मे तीन प्रकार के राज्यों की पहचान
की।

(A) कोर (B) परिधि (C) अर्द्ध परिधि

(2) वालर्स्टीन ने पूँजीवाद मे सैन्टर को अपरिहार्य माना परन्तु उन्होंने माना कि अर्द्ध परिधि से राज्य केन्द्र की तरफ आ सकते है अर्थात विकासशील देश भी विकसितों की श्रेणी मे आ सकते हैं।

Scanned with CamScanner

इन्होंने तीनों देशों के राज्यों के मध्य शोषणात्मक चित्रण किया, उनके अनुसार केन्द्र, परिधि तथा अर्द्ध परिधि देशों का शोषण करते हैं, अर्द्ध परिधि के द्वारा परिधि राज्यों का शोषण किया जाता है केन्द्र को बनाए रखने में अर्द्ध परिधि के राज्यों की भूमिका अत्यधिक होती है। और इन्होंने पराश्रितता सिद्धान्तकारों की तरह कहा कि संसाधनों का प्रवाह केन्द्र से परिधि की ओर होता है।

पराश्रितता सिद्धान्त और विलरस्टीन की मान्यता -

(1) विलरस्टीन ने भी पराश्रितता सिद्धान्तकारों को अस्वीकार कर दिया क्योंकि पराश्रितता सिद्धान्तकारों ने साम्राज्यवादी व्यवस्था को शोषणकारी और प्रगामी कहा अतः विलरस्टीन लेनिन की मान्यता से भी असहमत हैं इन्होंने मार्क्स की मान्यता को पुनः रेखांकित करते हुए कहा कि सब उपनिवेशवादी शक्ति प्रगतिशील है क्योंकि इसके द्वारा तीसरी दुनियाँ में पूंजीवाद का विकास सम्भव होता है।

Scanned with CamScanner

② मार्क्सवादी मान्यता के अनुसार पूंजीवादी व्यवस्था के साथ ही साम्यवाद सम्भव है।

③ विल्वेरन के अनुसार भी विश्व में पूंजीवाद के विकास के अनुसार साम्यवादी क्रान्ति स्वाभाविक रूप से होगी।

जोह्टेन रोबनबर्ग यथार्थवाद और मार्क्सवाद -

① मार्क्सवादी यथार्थवादियों को पूंजीवादी मानते हैं। रोबनबर्ग के अनुसार यथार्थवादी मान्यता यथास्थितीवादी एवं आधिपत्यपूर्ण है।

② रोबनबर्ग ने यथार्थवाद के मूल आधार का खण्डन किया, उन्होंने यथार्थवाद को पुनैतिहासिक कहा क्योंकि यथार्थवादी राज्य को अपने विश्लेषण का केन्द्र बिन्दु मानते हैं परन्तु उन समाज और आर्थिक व्यवस्थाओं की अवहेलना करते हैं जिस पर राज्य टिका है।

③ रोबनबर्ग के अनुसार अं. राजनीति में पूंजीवाद के परिणामस्वरूप अराजकता व्याप्त है। ∴ अराजकता का मूल कारण किसी केन्द्रीय सत्ता का अभाव होना क्योंकि नहीं बल्कि पूंजीवादी व्यवस्था की मूल प्रकृति ही अराजक होती है।

Scanned with CamScanner

④ रोजनबर्ग के अनुसार उपाश्रयी राज्य को एक स्वायत्त संस्था मान लेते हैं और सम्प्रभुता या शक्ति इसकी मूल विशेषता मानी जाती है, ये सम्प्रभुता पूंजीवाद को कायम करने हेतु निर्मित होती है।

रवार्ट काक्स एवं पूँजीवाद का नवीन विश्लेषण -

① रवार्ट काक्स ने पूंजीवादी साम्राज्यवादी व्यवस्था बने रहने का मूल कारण साम्राज्यवाद द्वारा उत्पन्न की गई समस्या माना है। उदा० के लिए समकालीन युग में भूमण्डलीकरण, युग में सभी के लिए समान रूप से लाभकारी कहा जा रहा है जबकि यह मूलतः पूंजीवादी के हित है।

② ब्रिटिश उपनिवेशवादी की आर्थिक व्यवस्था का विश्लेषण करते हुए उन्होंने कहा कि साम्राज्यवाद बनाए रखने हेतु उन्होंने वैचारिक आधार का निर्माण किया।

③ रवार्ट काक्स मान्यता से स्पष्ट है कि साम्राज्यवाद केवल सैन्य आधार पर कायम नहीं बल्कि मूल आधार वैचारिक और सांस्कृतिक है। साम्राज्यवादी व्यवस्था बनाने हेतु वैचारिक और सांस्कृतिक नेतृत्व की आवश्यकता है।

Scanned with CamScanner

(4) यह पूँजीवादी व्यवस्था कायम रहने और विध्वंस का एक विश्लेषण है जो उदारवादी मान्यता से भिन्न है।

<u>आलोचना</u> -

(1) शीतयुद्धोत्तर भूमण्डलीकरण के युग में बाजारवादी व्यवस्था एवं उदारवादी मान्यता को अधिकांश विश्व में स्वीकार किया जा रहा है।

लैटिन अमेरिकी देश भी संरचनात्मक समायोजन कार्यक्रम को स्वीकार कर रहे हैं। मैक्सिको ने अमेरिका के साथ मुक्त व्यापार का समझौता कर लिया है।

पूर्वी यूरोपीय राज्य जो पहले साम्यवाद के प्रभाव में थे उन्होंने भी उदारवादी व्यवस्था अपना ली, अधिकांश E.U. के सदस्य हो गए।

चीन ने भी बाजारवादी समाजवाद का नारा देते हुए समाजवादी ढाँचे में उदारवाद अपनाया।

वियतनाम जैसे साम्यवादी देश उदारवाद की ओर अग्रसर हैं, मार्क्सवाद का अगवा रूस स्वयं बाजारवादी नीतियों की ओर अग्रसर है। व्यावहारिक रूप से देखने में प्रतीत होता है कि मार्क्सवाद की बजाय पूँजीवाद और उदारवाद प्रभावी

Scanned with CamScanner

मार्क्सवादी सिद्धान्त की सैद्धान्तिक आलोचना -

① अनेक सिद्धान्तकारों के अनुसार मार्क्सवाद अं. राजनीति सिद्धान्त ही नहीं क्योंकि अं. राजनीति की मूल मान्यताओं का अभाव है जैसा कि उदारवाद एवं यथार्थवाद के अन्तर्गत किया गया।

② आलोचकों के अनुसार मार्क्सवादी सिद्धान्त अपचयनवाद का शिकार है क्योंकि इसमें अर्थव्यवस्था को एकमात्र कारक मान लिया गया और अन्य कारकों को आर्थिक कारकों का परिणाम मान लिया गया, केवल आर्थिक विश्लेषण द्वारा अं. राज० की सम्पूर्ण समझ का विकास नहीं हो सकता।

मार्क्सवादी आलोचना का प्रतिउत्तर -

① मार्क्सवादी मान्यता आर्थिक अपचयनवाद नहीं बल्कि आर्थिक निर्धारणवाद है।

② :- मार्क्सवादी विचारधारा में आर्थिक कारकों को प्राथमिक माना गया अन्य की तुलना में एकमात्र कारक नहीं।

③ अल्थ्युजर के अनुसार आर्थिक कारक अंतिम रूप से निर्धारणकारी होते हैं परन्तु सदैव प्रभावी नहीं होते किंतु अतः अन्य कारक भी प्रभावी हो सकते हैं। ∴ मार्क्स को आर्थिक अपचयनवादी

कल्पना भविष्यगत एवं दुराग्रहपूर्ण है।

(4) मा. राज. से किसी भी सामान्य सिद्धान्त का अभाव है। सभी सिद्धान्त आंशिक और अधूरे है केवल मार्क्सवाद ही नहीं।

निष्कर्ष –

(1) मार्क्सवादी सिद्धान्त की त्रुटि, अनोखी एवं अनुपम है जब तक विश्व में विषमता, शोषण, अभाव और गरीबी विद्यमान है तब तक मार्क्सवादी विश्लेषण प्रासंगिक रहेगा।

(2) मार्क्सवादी विश्लेषण का मूल तत्व उसका नैतिक पक्ष है जिसमें एक समतामूलक विश्व की कल्पना होगा। जिससे व्यक्ति अभाव से मुक्त होगा। व्यवस्था से स्वतंत्र होगा, मानव की पहचान मानव रूप से होगी।

(3) अतः मार्क्सवादी विश्लेषण की पद्धति में कमी हो सकती है परन्तु उसके उद्देश्य और लक्ष्य कभी भी अप्रासंगिक नहीं हो सकते।

Scanned with CamScanner